RESEARCH ARTICLE

विधिना | Vidhina

ISSN: (Online): 3049-3986

Publishing Today, Inspiring Tomorrow

Published Online | Special Issue. | Nov.2025 | pp.08-12

Quarterly, Multilingual, Multidisciplinary, Peer-Reviewed E-Research Journal

प्राचीन भारत में सामाजिक संस्थाओ में शैक्षणिक संस्था का महत्व "तक्षशिला महाविद्यालय के विशेष संदर्भ में"

*डॉ. शिवांगी सिंह

अतिथि प्रवक्ता, इतिहास विभाग महाराजा सुहेल देव विश्वविद्यालय, आजमगढ़

सारांश

व्यास, बाल्मीकि, मनु, चाणक्य, कामन्दक, शुक्र, बृहस्पति आदि महान् ऋषियों, मनीषियों एवं विद्वानों के विचार भारत राष्ट्र को समुन्नत करके विश्व का अग्रणी बनाने में समर्थ हुए हैं। वैदिक संहिताओं के अनन्तर ब्राह्मण, आरण्यक, कल्पसूत्र, स्मृति आदि साहित्य में, अन्य अनेक विषयों के साथ ही राजनीतिक और प्रशासनिक व्यवस्था के सम्बन्ध में विस्तृत निर्देश हैं। महाकाव्य एवं पुराणों में प्रशासन के नियमों का विस्तार से कथन और प्रतिपादन किया गया है। तदनन्तर अनेक विद्वानों ने राजशास्त्र विषयक अनेक ग्रन्थों का प्रणयन किया। 'कौटिल्य- अर्थशास्त्र', 'कामन्दक-नीतिसार', 'विदुरनीति', 'शुक्रनीतिसार', 'नीतिवाक्यामृत', 'लघु-अर्थनीति', 'नीतिकणीमृत', 'राजनीतिरत्नाकर' आदि ग्रन्थों ने राजशास्त्र, प्रशासनिक संस्थाओं के स्वरूप को अधिक विस्तार से प्रस्तुत किया। 'युक्तिकल्पतरु', 'वीरमित्रोदय', आदि ग्रन्थ इस प्रकार के हैं, जिनमें प्राचीन भारतीय राजशास्त्र न्यायव्यवस्था और प्रशासनिक संस्थाओं का ढांचा विस्तार से प्रस्तुत किया गया है। प्राचीन काल में अनेक प्रशासनिक एवं राजनितिक ढाचो के अतिरिक्त शैक्षणिक ढाचा अपनी सदृढ़ अवस्था में था। वर्तमान विश्व की राजनीति पूर्वकाल की अपेक्षा बहुत परिवर्तित है। यातायात के साधनों के विकास और शिक्षा के प्रसार ने विश्व के सभी स्थानों को आभासी रूप से जोड़ दिया है। भारत में प्राचीन शिक्षा का इतिहासकार इस तथ्य से एकमत हैं कि तक्षशिला सभी विषयों की शिक्षा का उत्कृष्ट केंद्र था।

शब्द कुंजिका - सामाजिक सस्थाओ, शैक्षणिक संस्था, तक्षशिला महाविद्यालय, जीवक, आत्रेय, सुश्रुत

उद्देश्य- प्राचीन भारत की शैक्षणिक संस्थाओ के आधार पर तक्षशिला महाविद्यालय में दी जाने वाली शल्य चिकित्सा एवं आयुर्वेद के ज्ञान पर ध्यान आकृष्ट करना।

Article Publication

Published Online - November 2025

Corresponding Author

डॉ. शिवांगी सिंह

अतिथि प्रवक्ता, इतिहास विभाग, महाराजा सुहेल

देव विश्वविद्यालय, आजमगढ़

© 2025 - published by *Vidhina*

This is an open access article under the CC BY-NC 4.0

भूमिका

RESEARCH ARTICLE

विधिना | Vidhina

ISSN: (Online): 3049-3986

Publishing Today, Inspiring Tomorrow

Published Online | Special Issue. | Nov.2025 | pp.08-12

Quarterly, Multilingual, Multidisciplinary, Peer-Reviewed E-Research Journal

वैदिक सभ्यता के आरम्भिक काल में ही राजनीतिक और प्रशासनिक संगठन के ढांचे का विकास हो गया था। 'ऋग्वेद' एवं उसके उत्तरवर्ती वैदिक साहित्य के अध्ययन से उस युग के विकसित राजनीतिक और प्रशासनिक संगठनों के विकास का ज्ञान होता है। वैदिक युग में सुदृढ़ प्रजाहितकारी प्रशासन की स्थापना हो चुकी थी। शासन का केन्द्र यद्यपि राजा था, तथापि वह स्वच्छन्द एवं स्वेच्छाचारी नहीं था एवं कुछ प्रजातन्त्रात्मक तत्त्वों का नियन्त्रण था। वह सभा एवं समिति की सहायता से शासन का संचालन करता था। वैदिक संहिताओं में राजनीति एवं शासन व्यवस्था के सम्बन्ध में विस्तृत विवरण प्राप्त होते हैं। कठ, यौधेय, मद्र, लिच्छवि, शाक्य, वज्जि, अन्धक-वृष्णि आदि प्राचीन भारतीय गणराज्यों की शासन-संस्थाएँ क्या थीं, इस संम्बन्ध में कतिपय निर्देश ही हमें प्राप्त हैं। अब तक कोई ऐसे ग्रन्थ उपलब्ध नहीं हुए हैं, जिनसे इनकी शासन-पद्धतियों का विशद रूप से ज्ञान प्राप्त किया जा सके। राजतन्त्र जनपदों की शासन-संस्थाओं के विषय में कुछ अधिक परिचय प्राचीन ग्रन्थों से प्राप्त किया जा सकता है, पर यह भी अपर्याप्त है। बृहस्पत्य, औशनस, मानव, आम्भीय, पाराशर आदि सम्प्रदायों एवं कौणपदन्त, पिशुन, वातव्याधि,पिशुन, वातव्याधि, प्राचीन भारत की प्रशासनिक एवं राजनीतिक संस्थायें वर्द्धन, मौखरी, चालुक्य, राष्ट्रकूट, गुर्जर, प्रतीहार, परमार आदि राजवंशों के शासन-काल में सामन्तपद्धति ही भारत की प्रमुख संस्था थी। इस पद्धति के समय उस प्रकार की शासन-संस्थाओं की सत्ता सम्भव ही नहीं थी, जो इस देश में प्राचीन काल में विद्यमान थीं। जनपदों का इस काल में अन्त हो गया था, और गणतन्त्र राज्यों का शासन भी ऐसे महाराज महासेनापतियों के हाथों में आ गया था, जो किसी प्रतापी महाराजाधिराज की अधीनता स्वीकृत करते थे। छोटी-छोटी जागीरों के शासक भी इस युग में राजा कहलाने लगे थे, प्राचीन जनपदों का स्थान ऐसी जागीरों ने ले लिया था, जिनके जागीरदारों अथवा शासकों की स्थिति उनके अपने बाहुबल पर ही आश्रित थी। इस दशा में न पुरानी पौर-जनपद संस्थाएँ ही कायम रह सकती थीं, जिनमें प्रधानतया शासक राजवंश के सजातीय व्यक्ति ही सम्मिलित होते थे। साम्राज्य-युग की सेनाओं का स्थान अब ऐसी सेनाओं ने ले लिया था, जिनके सैनिक सामन्त राजाओं की जाति के साथ सम्बन्ध रखते थे। भारत की प्राचीन शासन संस्थाओं ने अपने-अपने समय के विचारकों को भी प्रभावित किया। इसी कारण कौटलीय अर्थशास्त्र, महाभारत, स्मृतिग्रन्थों आदि में विविध प्रकार के राजनीतिक मन्तव्य और सिद्धान्त प्रतिपादित हैं। जहाँ कतिपय विचारक राजाओं को इन्द्र, मित्र, वरुण, यम आदि देवताओं के अंश लेकर निर्मित मानते हैं, यह प्रतिपादित करते हैं कि यदि राजा बालक हो तो भी उसे 'महती देवता' समझना चाहिए।[i]

प्राचीन भारत में विभिन्न संस्थाए विद्यमान थी। जिनमे शासक, प्राचीन भारत के प्रमुख जनपद, राजा, मन्त्रि-मण्डल अन्य परामर्शदात्री संस्थायें, राजकीय विभाग, पदाधिकारी, राजकीय आय-व्यय (कोष), भारतीय राजशास्त्र के सिद्धान्त, न्यायव्यवस्था, दण्डप्रणाली, सैन्य संगठन,युद्ध[ii] **शैक्षणिक संस्थाऐ।**

शैक्षणिक संस्थाओं का महत्व

प्राचीन भारत में जीवन में एक बड़ी भूमिका निभाता था। शिक्षक आमतौर पर पुजारी होते थे। जो विद्यार्थी के मन में धर्मपरायणता और धार्मिकता की भावना का संचार शिक्षा का प्रथम एवं महत्वपूर्ण उद्देश्य माना जाता था। प्राथमिक एवं उच्चतर, साहित्यिक अथवा व्यावसायिक शिक्षा, दोनों के आरंभ में किए जाने वाले अनुष्ठान, शिक्षा के दौरान विद्यार्थी को किए जाने वाले धार्मिक अनुष्ठान (व्रत), सुबह-शाम की जाने वाली दैनिक

RESEARCH ARTICLE

विधिना | Vidhina

ISSN: (Online): 3049-3986

Publishing Today, Inspiring Tomorrow

Published Online | Special Issue. | Nov.2025 | pp.08-12

Quarterly, Multilingual, Multidisciplinary, Peer-Reviewed E-Research Journal

प्रार्थनाएँ, गुरु के घर में लगभग हर महीने धूमधाम से मनाए जाने वाले धार्मिक उत्सव, ये सभी युवा विद्यार्थी के मन में धर्मपरायणता, धार्मिक भावना को जाग्रत करते थे।

विभिन्न प्रकार के शैक्षिक केंद्र, महान प्रसिद्ध तक्षशिला विश्वविद्यालय, नालंदा विश्वविद्यालय, वल्लभी विश्वविद्यालय, विक्रमशिला विश्वविद्यालय, अन्य बौद्ध शिक्षा केंद्र, हिंदू मंदिर महाविद्यालय- सालोत्गी, एन्नयिरम, तिरुमुक-कुडल, तिरुवोरियूर और मलकापुरम में कुछ अन्य मंदिर विद्यालय और महाविद्यालय उच्च शिक्षा के केंद्र के रूप में अग्रहार गाँव। ये स्थान आमतौर पर राज्यों की राजधानियाँ या प्रसिद्ध तीर्थस्थल होते थे। यही वह परिस्थिति थी जिसने उत्तर भारत में तक्षशिला, पाटलिपुत्र, कन्नौज, मिथिला और धारा तथा दक्षिण भारत में मालखेड़, कल्याणी तंजौर जैसे शहरों को शिक्षा के प्रसिद्ध केंद्र बनाया। पवित्र स्थानों में प्राचीन काल से ही शिक्षा के प्रसिद्ध केंद्र रहे हैं। बनारस, कांची, नासिक, करहाटक आदि प्रसिद्ध शिक्षा केंद्र बने। कभी-कभी राजा विद्वान ब्राह्मणों को नए गाँव में बसने के लिए आमंत्रित करके और उनके भरण-पोषण का प्रबंध करके उनके बस्तियाँ स्थापित करते थे।

तक्षशिला के विशेष संदर्भ में

तक्षशिला केवल उच्च शिक्षा प्रदान करता था। तक्षशिला में विशेषज्ञता के लिए चुने गए प्रमुख विषय तीन वेद, व्याकरण, दर्शन थे। इनमें चिकित्सा, शल्य चिकित्सा, धनुर्विद्या, सैन्य कलाएँ, खगोल विज्ञान, ज्योतिष, लेखाशास्त्र, वाणिज्य, कृषि, संपत्ति-व्यापार, जादू खजाने खोजने की कला, संगीत, नृत्य एवं चित्रकला शामिल थे । विषयों के चयन पर कोई जातिगत प्रतिबंध नहीं थे। क्षत्रिय, ब्राह्मणों के साथ वेदों का अध्ययन करते थे । ब्राह्मण क्षत्रियों के साथ धनुर्विद्या में विशेषज्ञता प्राप्त करते थे। आयुर्वेद के प्रारंभिक लेखकों, चरक एवं सुश्रुत ने चिकित्सा पाठ्यक्रम में प्रवेश पाने के इच्छुक छात्रों के लिए एक विशेष उपनयन संस्कार निर्धारित किया था। वैदिक विद्वता की तरह , चिकित्सक पेशा, सिद्धांत रूप में, किसी विशेष जाति के एकाधिकार में नहीं था। इसलिए सुश्रुत का मानना है, कि एक क्षत्रिय अथवा वैश्य चिकित्सक भी अपनी जाति के लिए शिक्षक की भूमिका निभा सकता है। सुश्रुत का शल्य चिकित्सा विद्यालय शूद्रों को भी प्रवेश देने के पक्ष में था। आयुर्वेद के प्रारंभिक लेखकों, जैसे चरक और सुश्रुत, ने चिकित्सा पाठ्यक्रम में प्रवेश पाने के इच्छुक छात्रों के लिए एक विशेष उपनयन संस्कार निर्धारित किया

तक्षशिला- शल्य चिकित्सा एवं आयुर्वेद के केंद्र के रूप में

चिकित्सा एवं अन्य विज्ञानों में अपने धर्मनिरपेक्ष योगदान के कारण ऐतिहासिक ख्याति प्राप्त की। इनमें से कुछ ही इतिहास में ज्ञात हैं, अन्य हमेशा गुमनाम रहेंगे। यदि हम एक क्षण के लिए स्वयं को केवल शल्य चिकित्सा तक सीमित रखें, तो हम पाते हैं कि तक्षशिला में उत्खनन से प्राप्त शल्य चिकित्सा उपकरणों के रूप में कुछ पुरातात्विक वस्तुएँ उन लोगों के उल्लेखनीय प्रयासों पर रोचक प्रकाश डालती हैं जिन्होंने इन वस्तुओं का उपयोग शल्य चिकित्सा प्रक्रियाओं को मूर्त रूप देने के लिए किया होगा। इन वस्तुओं का वरन ये गांधार के कारीगरों के धातु विज्ञान निर्माण कौशल का भी प्रतिनिधित्व करती हैं। ये उन शल्य चिकित्सकों की विशेषज्ञता का भी प्रतिनिधित्व करती हैं जिन्होंने उस समय इसका उपयोग किया था एवं निस्संदेह ये उन रोगियों की पीड़ा को भी दर्शाती हैं जिन्होंने पीड़ा एवं कष्ट सहन किये। यूनानी, रोमन भूमि के बाहर

RESEARCH ARTICLE

विधिना | Vidhina

ISSN: (Online): 3049-3986

Publishing Today, Inspiring Tomorrow

Published Online | Special Issue. | Nov.2025 | pp.08-12

Quarterly, Multilingual, Multidisciplinary, Peer-Reviewed E-Research Journal

तक्षशिला एकमात्र ऐसा स्थान प्रतीत होता है जहाँ पुरातत्वविदों द्वारा शल्य चिकित्सा उपकरणों की खुदाई की गई है। तक्षशिला के कुछ विद्वान अथवा अर्ध-ऐतिहासिक व्यक्तित्व की चर्चा करना उचित है जो चिकित्सा एवं शल्य चिकित्सा से जुड़े थे। शल्य चिकित्सा सदा से एक कठिन कार्य रहा है जिसमें मृत्यु दर अधिक रही है सभी युगों में इसका उपयोग केवल तभी किया जाता था जब अन्य विकल्प नहीं था। शल्य चिकित्सकों का साहस इतना प्रबल था कि उनका उत्साह कभी कम नहीं हुआ। भारतीय चिकित्सा इतिहास के कुछ लेखकों ने प्राचीन मूर्तियों से शल्य चिकित्सा के प्रमाण खोजे एवं प्रस्तुत किए हैं। शल्य चिकित्सा के इतिहास में इतिहासकारों ने प्राचीन मूर्तियों से शल्य चिकित्सा के प्रमाण प्रस्तुत किए हैं। जो संभवतः शल्यचिकित्सको के शल्य-कौशल का प्रमाण है जो प्राचीन भारतीय इतिहास के सुदूर अतीत में शल्य चिकित्सा के समर्थन में पुरातात्त्विक प्रमाण के रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है

तक्षशिला में पढ़ाने वाले एक महान चिकित्सा शिक्षक आत्रेय थे, उनके नाम से संकेत मिलता है, कि वे तक्षशिला में पढ़ाने वाले एक महान चिकित्सा शिक्षक आत्रेय थे उनके नाम से संकेत मिलता है कि वे अत्रि वंश के थे जिनका उल्लेख प्राचीन ग्रंथों में विद्वानों और शिक्षकों के रूप में किया गया है। आत्रेय एक प्रसिद्ध और महान व्यक्ति थे जिन्होंने एक संत की तरह प्रतिष्ठा प्राप्त। किंवदंतियों के अनुसार उन्होंने चिकित्सा ज्ञान देवताओं से प्राप्त किया था एवं मानवता के लाभ के लिए इसे अपने शिष्यों के माध्यम से आगे बढ़ाने की जिम्मेदारी सौंपी थी। ऐतिहासिक काल खण्ड में महान आत्रेय के अस्तित्व को इंगित करना कठिन हैं। बौद्ध स्रोतों में आत्रेय का उल्लेख है। महावग्ग में, इसमें कई बार आत्रेय का उल्लेख तक्षशिला में रहने वाले शिक्षक के रूप में किया

आयुर्वेदिक चिकित्सा के प्रवर्तक के रूप में आत्रेय को सर्वोच्च सम्मान प्रदान करते हैं, वास्तव में, प्राचीनतम भारतीय चिकित्सा या आयुर्वेद को आत्रेय के बिना ऐतिहासिक गति नहीं दी जा सकती क्योंकि अधिकांश लोग मानते हैं कि वे देवताओं और मनुष्यों के बीच की कड़ी थे। जिन्होंने अग्निवेश, भेल, हरित, जतुकर्ण, पराशर औरक्षीरपाणि नामक छह शिष्यों को शिक्षा और प्रशिक्षण दिया। तीन शिष्यों के तीन ग्रंथ आमतौर पर विद्यमान माने जाते हैं। इन तीनों में से एक ग्रंथ, जिसका संबंध अग्निवेश के प्राथमिक रचयिता होने से है, प्रसिद्ध चरक संहिता है। भेल संहिता की एक प्रति अपूर्ण, क्षतिग्रस्त या भ्रष्ट रूप में मिलने का दावा किया जाता है। तीसरी प्रति, जिसे हरित संहिता के नाम से जाना जाता है, अभी अस्पष्ट है। हमें यह भी बताया गया है कि भेल संहिता किसी न किसी रूप में बोवर पांडुलिपि के लेखकों के पास उपलब्ध थी क्योंकि बोवर पांडुलिपि में इसके कम से कम तीन सूत्र उद्धृत किए गए हैं। आत्रेय ने जीवक को भी चिकित्सा की शिक्षा दी थी।जीवक का नाम ऊपर वर्णित छह शिष्यों में शामिल नहीं है, उनका नाम केवल तक्षशिला में आत्रेय के शिष्य के रूप में ही बौद्ध ग्रंथों में मिलता है। जीवक, एक अर्ध-ऐतिहासिक व्यक्तित्व, जिन्होंने तक्षशिला में चिकित्सा की शिक्षा प्राप्त की एवं बुद्ध के निजी चिकित्सक बने और इतिहास के एक लंबे कालखंड में एकमात्र नामित शल्यचिकित्सक थे, जिन्होंने अपने कार्यों अथवा शिक्षाओं के बारे में कोई ग्रंथ नहीं छोड़ा। जीवक को कुमारभक्क के नाम से भी जाना जाता , तो जीवक ने ही घाव को साफ किया, पैर पर औषधीय पट्टी बाँधी एवं आराम करने की सलाह दी। मठों में रहने वाले बौद्ध भिक्षुओं को बीमार देखकर जीवक ने बुद्ध को मठवासी दिनचर्या में नियमित व्यायाम शामिल करने के लिए राजी किया। बौद्ध भिक्षुओं में आमतौर पर देखी जाने वाली अनुकरणीय दृढ़ता, ऊर्जावान एवं स्वस्थ जीवन पर जीवक के दूरदर्शी विचारों का परिणाम हो सकती है।

निष्कर्ष- वर्तमान काल में प्राचीन भारतीय संस्थाओं के विषय में वर्तमान में, राधाकमल मुकर्जी, पी०वी० काणे, भगवतशरण उपाध्याय, आर०डी०बनर्जी, सत्यकेतु विद्यालंकार, आर०सी०मजूमदार, रामधारीसिंह दिनकर, हरिहरनाथ त्रिपाठी, रामजी उपाध्याय, हरिदत्त विद्यालंकार, के०पी० जायसवाल, ए०एस०अल्तेकर,

विधिना | Vidhina

ISSN: (Online): 3049-3986

Publishing Today, Inspiring Tomorrow

Published Online | Special Issue. | Nov.2025 | pp.08-12

Quarterly, Multilingual, Multidisciplinary, Peer-Reviewed E-Research Journal

आचार्य प्रियव्रत आदि नाम उल्लेखनीय है। अन्य संस्थाओ के अतिरिक्त शैक्षणिक संस्था अतिमहत्वपूर्ण एवं उन्नत थी। जिनमे सर्वाधिक महत्व पूर्ण **तक्षशिला महाविद्यालय** था। छात्र केवल विशेषज्ञता के लिए ही वहाँ जाते थे, जो उच्चय शिक्षा प्रदान करता था। जो वर्तमान में हायर एजुकेशन प्रदत्त करने वाली संस्था के समान थी। जहाँ अनेकानेक विषयों के अतितिक्त शल्य चिकित्सा का अध्ययन करवाया जाता था। तक्षशिला के चिकित्सा शिक्षण के उत्कृष्ट केंद्र होने की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि इतिहासकारों द्वारा चित्रित की गई तुलना में कहीं अधिक व्यापक है। यह विशिष्टता इस तथ्य के कारण है कि तक्षशिला में उत्खनित शल्य चिकित्सा उपकरण यूनानी, रोमन उपकरणों के समान हैं एवं विश्व में कहीं भी समान उपकरण अप्राप्य
हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

i. विद्यालंकार, सत्यकेतु प्राचीन भारत की शासन- पद्धति और राजशास्त्र,श्री सरस्वती सदन, ए-1/32 सरस्वती सदन ए - १/३२ सफदरजंग इन्क्लेव नई दिल्ली – 29

ii. डा. कुमार कृष्ण, प्रचीन भारत की प्रशासनिक एवं राजनीतिक संस्थाये, ,श्री सरस्वती सदन ए - १/३२ सफदरजंग इन्क्लेव नई दिल्ली – 29

iii. मुखर्जी, राधा कुमुद, एसियंट इंडियन एजुकेशन ,(ब्राह्मणवादी और बौद्ध), ,मैकमिलन एंड कंपनी लिमिटेड, सेंट मार्टिन स्ट्रीट, लंदन,1947

iv. डॉ. अल्तेकर, ए. एस. एजुकेशन इन अन्सियंट इण्डिया, ,बनारस नंद किशोर एंड ब्रदर्स एजुकेशनल पब्लिशर्स, द्वितीय संस्करण 1944

v. डॉ. नकबी एच. नसिम , अ स्टटी ऑफ बुद्धिसट मेडिसीन एण्ड सर्जरी इन गान्धार. मोतीलाल बनारसीदास, प्रकाशन, रोड जवाहर 41 यू.ए. बग्लो रोड़ नगर, दिल्ली 110007, प्रिंटिंग इन इण्डिया - जनैन्द्र प्रकाश जैन एड,श्री। जैनेन्द्र प्रेस ए.-45 प्रेस - 1 नई दिल्ली, 10028 एंड पब्लिशड बाय नरेन्द्र प्रकाश जैन फार मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर प्राइवेट लिमिटेड, बग्लो रोड, दिल्ली 110007

vi. वही

के.एल. दफ्तरी, द सोशल इंस्टिसन इन अन्सियंट इण्डिया, नागपुर विश्वविद्यालय कार्यालय, 1987

डॉ. शर्मा, रामशरण, प्राचीन भारत में राजनीतिक विचार एवं संस्थाएँ, राजकमल प्रकाशन प्रा.लि.बी, नेताजी सुभाष मार्ग, न्यू दिल्ली -110002, गायत्री आफसेट प्रेस, ए-66, सेक्टर -2, नोएडा-201 301